

तुमने बताया जगत को प्रत्येक कण स्वाधीन है।  
कर्ता न धर्ता कोई है अणु-अणु स्वयं में लीन है॥२३॥  
हे पाणिपात्री वीर जिन! जग को बताया आपने।  
जग-जाल में अबतक फँसाया पुण्य एवं पाप ने॥  
पुण्य एवं पाप से है पार मग सुख-शान्ति का।  
यह धर्म का है मरम यह विस्फोट आतम क्रान्ति का॥२४॥

(सोरठा)

पुण्य-पाप से पार, निज आतम का धर्म है।

महिमा अपरम्पार, परम अहिंसा है यही॥

विशेष :- इस जिनेन्द्र-वन्दना में चौबीस परिग्रहों से रहित चौबीस तीर्थकरों की वन्दना की गई है। एक-एक तीर्थकर की स्तुति में क्रमशः एक-एक परिग्रह के अभाव को घटित किया गया है।

### दर्शन-पाठ

दर्शनं देवदेवस्य दर्शनं पापनाशनम्।  
दर्शनं स्वर्गसोपानं दर्शनं मोक्षसाधनम्॥१॥  
दर्शनेन जिनेन्द्राणां साधूनां वन्दनेन च।  
न चिरं तिष्ठते पापं छिद्रहस्ते यथोदकम्॥२॥  
वीतराग-मुखं दृष्ट्वा पद्मराग-समप्रभम्।  
जन्म-जन्मकृतं पापं दर्शनेन विनश्यति॥३॥  
दर्शनं जिनसूर्यस्य संसारध्वान्तनाशनम्।  
बोधनं चित्त-पद्मस्य समस्तार्थ-प्रकाशनम्॥४॥  
दर्शनं जिन-चन्द्रस्य सद्धर्मामृत-वर्षणम्।  
जन्म-दाहविनाशाय वर्धनं सुख-वारिधेः॥५॥  
जीवादितत्त्वप्रतिपादकाय सम्यक्त्वमुख्याष्टगुणाश्रयाय।  
प्रशान्तरूपाय दिगम्बराय देवाधिदेवाय नमो जिनाय॥६॥  
चिदानन्दैक-रूपाय जिनाय परमात्मने।  
परमात्म-प्रकाशाय नित्यं सिद्धात्मने नमः॥७॥

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।  
 तस्मात्कारुण्य-भावेन रक्ष रक्ष जिनेश्वरः ॥८॥  
 नहि त्राता नहि त्राता नहि त्राता जगत्त्रये ।  
 वीतरागात्परो देवो न भूतो न भविष्यति ॥९॥  
 जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्दिने दिने ।  
 सदा मेऽस्तु सदा मेऽस्तु सदा मेऽस्तु भवे भवे ॥१०॥  
 जिनधर्मविनिर्मुक्तो मा भवेच्चक्रवर्त्यपि ।  
 स्याच्चेटोऽपि दरिद्रोऽपि जिन-धर्मानुवासितः ॥११॥  
 जन्म-जन्मकृतं पापं जन्म-कोटिमुपार्जितम् ।  
 जन्म-मृत्यु-जरा-रोगं हन्यते जिन-दर्शनात् ॥१२॥  
 अद्याभवत्सफलता नयनद्वयस्य,  
 देवः ! त्वदीय-चरणाम्बुजवीक्षणेन ।  
 अद्य त्रिलोकतिलकः ! प्रतिभासते मे,  
 संसार-वारिधिरयं चुलुकं प्रमाणम् ॥१३॥

### देव-स्तुति

(पं. बुधजन कृत)

(हरिगीतिका)

प्रभु पतित पावन, मैं अपावन, चरन आयो सरन जी ।  
 यो विरद आप निहार स्वामी, मेट जामन-मरन जी ॥  
 तुम ना पिछान्यो आन मान्यो, देव विविध प्रकार जी ।  
 या बुद्धिसेती निज न जान्यो, भ्रम गिन्यो हितकार जी ॥  
 भव विकट वन में करम वैरी, ज्ञान धन मेरो हस्यो ।  
 तब इष्ट भूल्यो भ्रष्ट होय, अनिष्ट गति धरतो फिस्स्यो ॥  
 धन घड़ी यो धन दिवस यो ही, धन जनम मेरो भयो ।  
 अब भाग्य मेरो उदय आयो, दरश प्रभु को लख लयो ॥  
 छवि वीतरागी नगन मुद्रा, दृष्टि नासा पै धरैं ।  
 वसु प्रातिहार्य अनन्त गुण जुत, कोटि रविछवि को हरैं ॥